ISSN : **2583-3189 (E), 2583-0775 (P)**
Year-02, Volume-02, Issue-01

AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

कबीरधाम जिले में बैगा जनजाति के सामाजिक – आर्थिक विकास परियोजनाएं

ORIGINAL ARTICLE

Authors

राजु चन्द्राकर,
शोधार्थी, भूगोल विभाग
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
ग्राम–सकरा, कुम्हारी जिला दुर्ग छत्तीसगढ़, भारत

डॉ कुबेर सिह गुरुपंच,
शोध निर्देशक, भूगोल
प्राचार्य देव संस्कृति कॉलेज आफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी खपरी दुर्ग छत्तीसगढ़ भारत

शोध सार

भारतीय संविधान के अनुरूप बैगा आदिवासी के शैक्षणिक विकास व आर्थिक उन्नति के लिए योजना बनी हैं उन्हें क्रियान्वित कर संबंधित वर्ग के विकास यात्रा में शामिल करने के निरंतर प्रयास हुए इन प्रयासों के परिणाम भी सामने आए हैं। इन वर्गो के लिए मानव अधिकार सूचना में अपेक्षाकृत सुधार परिलक्षित हुआ हैं। साक्षरता की प्रतिशत बढ़ा है, सामाजिक आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप इन वर्गों के प्रतिष्ठा में लगातार वृद्धि हुई हैं। शासन प्रशासन ने इसके सहभागिता सम्मानजनक रूप में बड़ी हैं फिर भी विकास की यात्रा अभी लंबी हैं। सरकार के द्वारा आदिवासी बैगा विकास योजना के लिए विभिन्न कानून योजना बनाए गये हैं।

मुख्य शब्द

बैगा, सामाजिक, आर्थिक विकास, परियोजना.

प्रस्तावना

भारतीय समाज में विभिन्न जनजातियों का पाया जाना हमारी सभ्यता संस्कृति का धरोहर है। आधुनिक युग की खोज उपभोगवाद पर आधारित हैं किंतु आदि इतिहास के संदर्भ में आदिम जनजाति का अध्ययन करना भी आदिम समाज की आवश्यकता हैं। यह आदिवासी जंगल में निवास करते हैं, जंगल में अपना जीवन यापन करते हैं। आधुनिकता के चकाचौंध से कोसों दूर हैं। कभी–कभी ऐसा लगता है कि यह जाति अपने जंगली वातावरण में ही मदमस्त जीवन–यापन करने के लिए बनी है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और मानवीय विकास का चक्र निरंतर चलता है। समाज का कर्तव्य है कि समाज का प्रत्येक प्राणी सुखी जीवन यापन करें। इस हेतु सरकार ने विभिन्न प्रकार के योजनाओं का क्रियावान हैं। वर्तमान परिवेश में आदिवासी जनजाति का विकास सरकार की प्रमुखता है। देश के संपूर्ण विकास से सभी समुदाय का सहयोग आवश्यक है। किसी एक समुदाय को छोड़कर देश के समग्र विकास नहीं किया जा सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि विश्व का अनेक मानव जातियो ने विकास परीकृत रूप किया है और आधुनिक प्रजाति के रूप में आ गए, किंतु अनेक आदिमजाति विलुप्त हो गई। भारतीय आदिम जातियों ने अपने आपको विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रखा उनमें से बैगा जनजाति एक हैं। प्रदेश के बैगा जनजाति समूह भाषा रहन–सहन की दृष्टि से भिन्न है, विविध समूह संस्कृति संपर्क की मात्रा भी भिन्न–भिन्न हैं।

बैगा आदिवासी

बैगा शब्द का अर्थ–पुरोहित है इसलिए इसे पांडा भी कहा जाता है। यह नागा बैगा को पूर्वज मानते हैं, ग्राम के पुरोहित होने के साथ–साथ यह चिकित्सक भी होते हैं। यह कबीरधाम जिले के मैकाल पर्वत श्रेणी कवर्धा, मुंगेली, राजनांदगांव, बिलासपुर में फैले हुए हैं। 2011 जनगणना के अनुसार छत्तीसगढ़ में बैगा जनजाति 89,744 हैं। वेनियर एल्विन "द बैगा" 1939 तथा दयाशंकर नाग ने 1958 में "The tribal economy" बुक बैगा जनजाति पर आधारित है।

बैगा जनजाति की संस्कृति के अध्ययन से पता लगता है कि जीवनपद्धति, संस्कृति, कला और साहित्य के विकास में बैगाओं ने अपनी बुद्धि कौशल का भरपूर उपयोग किया है, इसी कारण संसार की विभिन्न जातियों में बैगा जनजाति की एक अलग पहचान और प्रतिष्ठा हैं। बैगा अपनी धरती व प्राकृतिक उत्पादनों से जीवन की बहुत सी आवश्यक वस्तु का निर्माण है, उससे उनकी प्रतिभा और छवि को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं। बैगा जनजाति संसार की सबसे अधिक गोदना प्रिय जनजातियो में से एक हैं। स्त्री पूरे शरीर में गोदना धारण करती हैं। बैगा एक कला प्रिय जनजाति हैं। इसके पारंपरिक कर्मा, सैला, पार्धोनी, फाग, नृत्य व गीत है।

जनजाति की परिभाषा

गलीन के अनुसार, ''स्थानीय आदिम समूह के किसी भी समूह जो किसी एक सामान्य क्षेत्र में रहता है एक सामान्य भाषा बोलता हो और एक समान संस्कृति का अवतरण करता हो एक जनजाति कहते हैं।''

अध्ययन के उद्देश्य

1. आदिवासी बैगा जनजाति के विकास लिए सरकार द्वारा लागू विभिन्न योजनाओं का अध्ययन करना।
2. आदिवासी क्षेत्र में सरकार के योजना के लाभ का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र बैगा जनजाति का किया गया है जो एक पिछड़ी जनजाति हैं। बैगा जनजाति मुख्यतः कबीरधाम जिले मे पाई जानी है जो कि 21 32" से 21 35" उत्तरी अक्षांश तथा 80 48" से 81 28" पूर्वी देशांतर में है। जिले का कुल क्षेत्रफल 44,470.5 वर्ग किलोमीटर है। प्रशासनिक रूप से कबीरधाम जिले को 5 तहसील और 4 विकासखंड में बांटा गया है जिसमें नगर पंचायत 5 नगर पालिका 1 तथा गांव की संख्या 1006 हैं। 2011 जनगणना के अनुसार यहां की जनसंख्या 8,22,526 है। साक्षरता दर 50.33 प्रतिशत है जिसमें कबीरधाम के रेंगाखार, चिल्फी, बोडला और भोरमदेव के आसपास बैगा जनजाति पाए जाते हैं।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध प्रबंध में अल्पसंख्यक बैगा जनजाति का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु 300 घरों का चयन दैवनिर्देशन प्रणाली किया जाएगा प्रत्येक परिवार के मुखिया से साक्षात्कार किया जाएगा।

आदिवासी क्षेत्रों में प्राथमिक तथ्यों का संकलन अनुसूची प्रविधि, निरीक्षण पद्धति, साक्षात्कार, व्यक्तिगत अध्ययन विधियों से किया जाएगा। इस कार्य हेतु अनुसूचियों तथा मार्गदर्शिका वस्तु स्थिति की वास्तविकता को शोध प्रदर्शन में प्रस्तुत करने हेतु छायांकन लोकगीत तथा अन्य तथ्यों को टेप का प्रयोग किया जाएगा।

द्वितीयक आंकड़ों का संकलन हेतु प्रकाशित पुस्तकें, पूर्व शोध अध्ययन, पत्र, पत्रिकाएं, शासकीय प्रतिवेदन, विभागों से संरक्षित अभिलेख व अन्य माध्यम जैसे समाचार पत्र इंटरनेट टेलीविजन आदि का उपयोग किया जायेगा।

तथ्यों का विश्लेषण आवश्यक सांख्यिकी प्रवृत्तियों के द्वारा तत्वों का विश्लेषण किया जाएगा।

बैगा जनजाति के सामाजिक आर्थिक विकास की परियोजना

छत्तीसगढ़ सरकार प्रदेश के वनांचल और जंगलों के बीच रहने वाले आदिवासी विशेष पिछड़ी जनजातियों

की सामाजिक तथा आर्थिक उत्थान के लिए प्रतिभा प्रतिबद्ध हैं। वनांचल और जंगलों में निवास करने वाले लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए अनेक से योजना संचालित किए गए हैं:

- विभाग द्वारा संचालित प्रमुख योजनाएं।
- विभागीय छात्रावासों का संचालन।
- विभागीय आश्रमों का संचालन।
- ऑनलाइन पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति।
- अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति।
- आदिम जाति एवं अनुसूचित जाति विद्यार्थियों के लिये उत्कृष्ट योजना।
- छात्र भोजन सहायता योजना।
- छात्रावास विद्यार्थी के लिए विशेष शिक्षण केंद्र योजना।
- स्वास्थ तन स्वस्थ मन योजना।
- एकलव्य आदर्श विद्यालय।
- अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति अधिनियम के अंतर्गत राहत योजना।
- प्रधान मंत्री आदर्श ग्राम योजना।
- सम्मान व पुरस्कार लोक कला महोत्सव।
- आदिवासी सांस्कृतिक दलों का सहायता योजना।
- जनजातियों के पूजा स्थल देव गुड़ी का परीक्षण एवं विकास।
- विश्व आदिवासी दिवस व अंतरराष्ट्रीय आदिवासी दिवस नृत्य महोत्सव।
- मुख्यमंत्री बाल विकास योजना।
- वन बंधु कल्याण योजना।
- प्रधानमंत्री जन विकास कार्यक्रम योजना।

विशेष रुप से कमजोर जनजाति समूह के सांकेतिक विकास हेतु मुख्यमंत्री 11 सूत्री कार्यक्रम प्रदेश में विशेष रुप से कमजोर जनजाति समूह अबूझमाड़, कमार, पहाड़ी कोरवा ,बैगा, बिरहोर, और भुजिया को समाज के प्रमुख धारा से जोड़ने तथा इसके सांकेतिक विकास हेतु मुख्यमंत्री 11 सूत्री कार्यक्रम की शुरुआत नवंबर 2015 में की गई थी। वर्ष 2015–16 की आधारभूत सर्वेक्षण की अग्रिम आंकड़ों के अनुसार इन जाति समूह की जनसंख्या 2,23,998 हैं तथा कुल परिवार की संख्या 57,432 है जो 16 जिलों के 2,101 ग्रामों में निवास करती हैं ।इस कार्यक्रम को विभिन्न विभागों के योजनाओं के अभिसरण के माध्यम से संचालित किया गया है जो निम्न हैं:

- आवासहीन परिवारों के लिए आवास।
- पेयजल विहीन ग्रामों में पेयजल की उपलब्धता।
- विद्युत विहीन ग्रामों में विद्युत विद्युतीकरण।
- स्वास्थ्य परीक्षण।
- खाद्य सुरक्षा प्रदान करना।
- 0 से 6 वर्ष के बच्चे तथा गर्भवती स्तनपान कराने वाली माताओं को कुपोषण से बचाने के लिए पोषक आहार प्रदान सुनिश्चित करना।
- कौशल अध्ययन।
- सामाजिक सुरक्षा।

- वन अधिकार पत्र वितरण।
- जाति निवास पत्र वितरण।
- सूचना जागरूकता के लिए रेडियो तथा आवश्यकता हेतु छाता व कंबल वितरण।

समस्याएं

जंगलों के आसपास रहने वाले आदिवासियों की आमदनी का मुख्य स्रोत वनोपज को इकट्ठा करना तथा विक्रय करना है। इनका कृषि फसलों से प्राप्त हुआ मजदूरी से गुजारा करना कठिन हो जाता है। यह गरीब लोग जो भी चीजें इकट्ठा कर या बनाकर बेचते हैं। सभ्य समाज के लोग सस्ती कीमत पर क्रय कर उनका आर्थिक शोषण करते हैं। इस तरह से कई प्रकार के समस्याएं आदिवासियों को वन पद प्राप्त करने व विक्रय करने में आती हैं इनमें से कुछ इस प्रकार हैंः–

- वनों पर निर्भरता।
- वनों की कमी।
- जनसंख्या वृद्धि।
- उचित मूल्य ना मिलना।
- अशिक्षा व अज्ञानता।
- बाजारों से दूरी।
- वस्तु विनियम प्रणाली।
- शासकीय नीति।
- आगमन के असुविधा।
- बिचौलियों व्यापारियों से व्यापार।

बैगा जनजाति द्वारा प्राप्त बैगा जनजाति द्वारा प्राप्त किए जाने वाली प्रमुख वन उपज

क्रमाव	मुख्य वनोपज	व्याक्तया का सख्य	प्रातशत
1	**महुआ**	90	30
2	**आंवला**	46	16
3	**तदूपत्ता**	66	22
4	**सभी एवं सुखी लकड़ी**	96	32
	योग	300	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

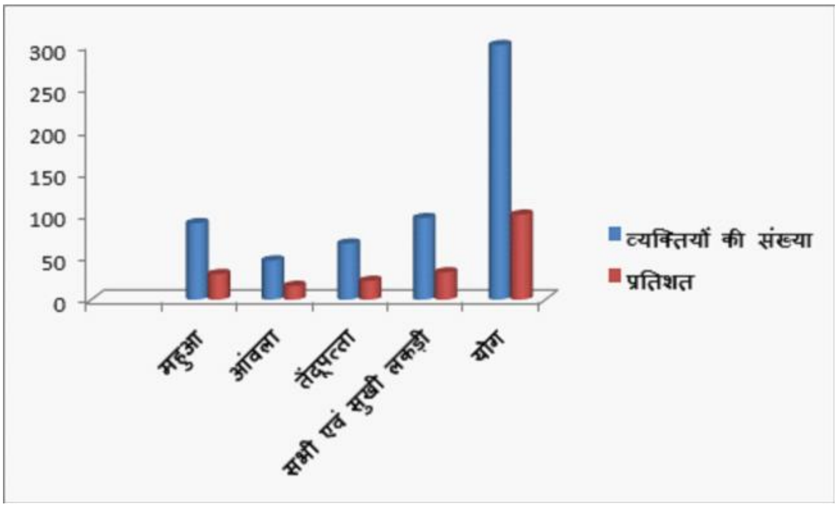

बैगा जनजाति द्वारा वन उपज का विक्रय कहाँ होता है

क्रमांक	विक्रेता	व्यक्तियों की संख्या	प्रतिशत
1	**गांव के व्यापारी**	108	36
2	**बिचौलिए**	54	18
3	**बाजार या हाट**	96	32
4	**शहर**	42	14
	योग	300	100

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

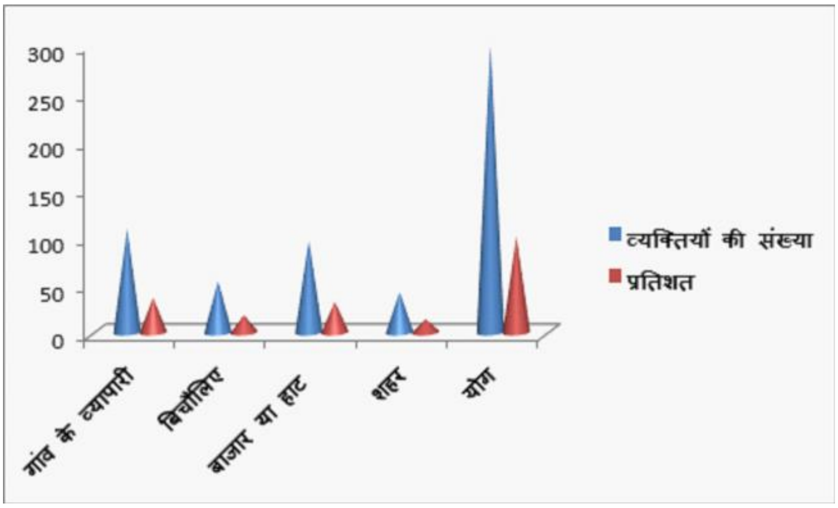

निष्कर्ष

बैगा जनजाति के लोग अभी भी शासकीय योजनाओं का पर्याप्त लाभ प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। यद्यपि शासकीय प्रयासों व गौड़ जनजाति के देखा सीखी योजना के लाभ प्राप्त करने के लिए बैगा प्रयासरत होने में लगे हैं व शिक्षा, पशुपालन, कृषि में यह विकास की ओर अग्रसर हो रहे हैं। द्वितीय एवं तृतीय अर्थव्यवस्था आधारित योजनाओं का लाभ प्राप्त करने की ओर ये अभी तक उन्मुक नहीं हो सके हैं जो संभावित इस जनजाति की स्वभाव जन्य विशेषता के कारण योजना की पूर्ण जानकारी ना होना एवं त्रुटिपूर्ण अवस्था है जिसका निदान आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पटेल, जी. पी. (1991) , ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक समस्या एवं समाधान (मध्यप्रदेश के संदर्भ में) *बुलेटिन ऑफ द ट्राईबल रिसर्च एंड डेवलपमेंट* भोपाल वॉल्यूम –19 नंबर ,1.2 पृष्ठ से 20 –27।
2. सिह, एम ,(1988) कामकाजी महिलाओ, एक सामाजिक वैज्ञानिक विशलेषण, योजना वर्ष –32 .अंक 19 पृष्ट 20–27, नईदिल्ली।
3. सिह, पीताम्बर (2016), *बैगा जनजाति की सामाजिक स्थिति एवं समाज कार्य हस्तक्षेप*।
4. तिवारी, शिवकुमार, (1984) भारत की जनजातियां नाईनर बुक सेंटर नई दिल्ली, तिवारी, एस. के मध्य प्रदेश के आदिवासी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
5. वैष्णव, टी.के (2004), *छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जनजातियां*।
6. यादव, अंजली (2012), *छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में बैगा जनजाति के विकास में पंचायती राज व्यवस्था की भूमिका*।

——==00==——